

Ques →

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में आप क्या समझे हैं।
उसके कार्यों का संक्षेप में वर्णन करें।

Ans →

IMF और G.B.R. दोनों ही जोड़ा
स्थापना जुलाई 1944 में अमेरिका के ब्रिक्समन्टन
नामक स्थान पर सैनार के 44 देशों प्रतिनिधियों के
प्रारम्भ से ही जन्मदाता सदस्यों में एक है। G.B.R. का
पुराना नाम International Monetary Fund था अन्तर्राष्ट्रीय
मुद्रा कोष होता है। इस नाम का गहन मुख्य रूप से
अवकाशीय अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक समस्याओं के निराकरण
के लिए हुआ। जबकि G.B.R. में विश्व बैंक दीर्घकालीन
अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक समस्याओं के निराकरण के लिए
स्थापित हुआ।

दोनों विश्वबैंक के पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक
समस्याओं जटिल नहीं थी, क्योंकि दूर समय स्वर्णमान का
स्वर्णमान के अन्तर्गत दो देशों के मुद्रा के बीच विनिमय
दुल्हों का निर्धारण आसानी से हो जाता था। अतः
देश मुक्त व्यापार नीति और स्वर्णमान के मुनरले
निमय अवका Golden Rule of - Gold Standard
का पालन करते थे, किन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ही
राधा: ~~स्वर्णमान~~ स्वर्णमान का पतन होने लगा। अतः पतन
जटिल और अनिर्धारित हो गयी। द्वितीय विश्वयुद्ध के
बाद ही स्वर्णमान का नामलेनवाला भी कोई देश
नहीं बचा। इसलिए जो सवाल न कहा है कि
स्वर्णमान एक ऐसा अज्ञान था, जो मौद्रिक ताकत होने
पर ही किनारे लगा सकता था। सामुद्रिक संस्था
जहाँ में इसका विकास करना सदैव स्पष्ट था। इन्हीं
के महर्षों में "Gold Standard was a fair
weather craft doubtful of seaworthiness in
stormy waters".

अतः प्रथम पत्र-मुद्रा का प्रचलन कहा। पत्र मुद्रा
के अन्तर्गत दो देशों के मुद्रा के बीच विनिमय
दर निर्धारित करने में कोई बाधा नहीं हुई। हर देश अपनी
मुद्रा का अन्तर्राष्ट्रीय मुख्य मानमान हो सके।

निर्धारित करने लगे जिससे कई अन्तराष्ट्रीय मौद्रिक
समस्याओं को हल हो गयी। मुख्य रूप से इनकी समस्याओं
को निराकरण के लिए ड.म.फ. का गठन हुआ।
संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में यह स्वीकार
किया गया है कि विश्व मानव को युद्ध की विभीषिका से
बचाने के लिए उपायों की पहिचान से पिछड़े देशों के
मौद्रिक असंतुलन से ग्रसित देशों की सहायता करनी पड़ी।
ड.म.फ. और ड.ब.र.उ. की स्थापना अन्तराष्ट्रीय मौद्रिक
सहयोग के द्वारा अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन मौद्रिक
समस्याओं का निराकरण भी है।

ड.म.फ. का गठन मुख्य रूप से संसार के
दो प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रोफ. रूथन और प्रोफ. ~~वॉल्टर~~
की योजना पर आधारित है। रूथन प्लान एम्ब्लेण्ड के
द्वारा और वॉल्टर प्लान अमेरिका के द्वारा प्रस्तावित हुआ था।
ड.म.फ. उन दो महान अर्थशास्त्री के द्वारा दिए गए विचारों
का समीक्षण है।

अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष का निर्माण मुख्य रूप से
एक केन्द्रीय बैंक की धारणा के आधार पर की
गई है जिस तरह हर देश में एक केन्द्रीय बैंक होता है,
उसी तरह अन्तराष्ट्रीय मौद्रिक समस्याओं के निराकरण
के लिए अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना हुई है।
जो हाल में अपनी पुस्तक *Monetary Policy* में लिख
दी कहा है कि —

International monetary fund
will be a bank of central banks, the cap stone
in the world's monetary system.

इस तरह अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष एक
और तीसरे देश की अपनी आन्तरिक मौद्रिक व्यवस्था
की सार्वभौमिकता को स्वीकार करती है और दूसरी ओर
यह स्वयंमान के उपायों की अन्तराष्ट्रीयता को भी लागू
करती है क्योंकि यह हाल में अगुआ पूर्ण राष्ट्रीय
सार्वभौमिकता और पूर्ण अन्तराष्ट्रीयता के बीच
मौद्रिक जगह एक समन्वयक है।

इस तरह, ~~यह~~ विश्व के रूप में
कहा जा सकता है कि स्वयंमान के पतन के बाद

- अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक तालमेल के क्षेत्र में कोषागार के
कार्यकारी निदेशों के लिए G.M.F. की स्थापना हुई।
निम्नलिखित कार्य निम्नलिखित हैं।
- (1) अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक तालमेल को जोरदार कार्यात्मक
द्विपक्षीय व्यापार के बड़े बहुपक्षीय अन्तर्राष्ट्रीय
व्यापार बने।
 - (2) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए ऐसी सुविधाएँ प्राप्त
करना, जिससे सदस्य राष्ट्रों के बीच रोकटोक का
रूप में प्राप्त हो सके।
 - (222) विनिमय स्थिति को जोरदार करना और विनिमय
दर को संतुलित कोटि निर्धारित करके अंतर्व्यापक
अवमूल्यन को रोकना।
 - (23) सदस्य राष्ट्रों के बीच व्यापार व्यवस्था में सम्बन्धित
बहुपक्षीय मुद्दों की व्यवस्था के द्वारा विदेशी मुद्रा
की कोषागार को दूर करने में मदद करना।
 - (V) समुचित संरक्षण के अन्तर्गत सदस्य राष्ट्रों के लिए
कोष के साधनों को उपलब्ध करवाकर उनमें विकास
उत्पन्न करना एवं मुद्रातान आंतरतुलन को सुधारने का
अवसर प्रदान करना।
 - (VI) राष्ट्रीय ~~व्यवस्था~~ मुद्रातान संतुलन के आंतरतुलन की
सहाय्य एवं दूसरी मंशा को प्राप्त करना।

संगठन

मार्च 1947 में G.M.F. ने
कार्य करना शुरू किया। प्रारम्भ में इसकी सदस्यों
की संख्या - 44 थी जो अब वल्लर 1992 की तुलना
में 185 हो चुकी है। G.M.F. का प्रबन्ध 2 संस्थाओं
द्वारा होता है - (1) Board of Governors (2) Board
of Directors। प्रत्येक सदस्य देश Board of
Governors में 5 वर्षों के लिए एक Governor
निर्भुक्त करता है। इसकी संसद में एक बार होती है
अथ नीति-निर्धारण करता है। सदस्यों का कोटा
रूप करता है। सदस्यों की प्रवेश करने की अनुमति
है। Board of Directors को चुनाव करता है।
विभिन्न सदस्यों की मुद्रा के विनिमय दरों के बारे में

जो 1944 में अमेरिकी विनिमय दरों को भी देख
को 1944 में अमेरिकी विनिमय दरों को भी देख
सदस्य हो सका है।

दैनिक कार्य सम्पादन 20 सदस्यों के
एक संचालन मण्डल द्वारा होता है। (नवम्बर 1944 में)
6 देश इसके स्थायी सदस्य होते हैं। वर्तमान में
अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, जापान
और भारत इसके स्थायी सदस्य हैं। इनका प्रधान
कार्यक्रम वाणिज्य में है। क्योंकि सदस्य वोट द्वारा
निर्वाचित होते हैं प्रत्येक सदस्य को अपने कोटा के
आधार पर वोट का अधिकार होता है कोई भी
सदस्य लिखित रूप में अपनी सदस्यता वापस ले सकता
है या मुद्रा को स्वयं भी निषेध के अन्तर्धान
करने वाले देशों को सदस्यता से बाहर कर सकता है।

अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष की कुंजी
सदस्य राष्ट्रों के अर्थशास्त्रों का योग होता है।
कोटा का 25% भाग सोना तथा विदेशी मुद्रा में देना
पड़ता है। शेष अपनी मुद्रा के रूप में—सोना पड़ता है।
सोना, Federal Reserve Bank of New York, Bank of
England, Bank of France और Reserve Bank of
India में रखा जा सकता है। समय-समय पर अर्थशास्त्र
का दर ~~कोष~~ निर्धारित हो सकता है। वर्तमान समय में
I.M.F. की कुल कुंजी 20 हजार करोड़ डॉलर है।

अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष इस तरह कार्य करता
है कि विदेशी विनिमय दरों में होने वाले उथल-पुथल को
रोका जा सके। बहुपक्षीय व्यापार को बढ़ावा मिले। विनिमय
दर में स्थिरता रहे। इसमें स्वयंसेवा के समान समीक्षात्मक
रहे और पत्र-मुद्रा के समान कहोला भी रहे। विनिमय
स्थिरता का कारण करने के लिए विभिन्न देशों की
मुद्रा का समान दर सोना तथा अमेरिकी डॉलर में
बतल किया जाता है। कोई भी राष्ट्र इस समान दर में
100% से अधिक परिवर्तन बिना मुद्रा कोष की अनुमति
नहीं कर सकता। मौलिक असंतुलन की स्थिति में
मुद्रा कोष सदस्य देश को अवमूल्यन या अवमूल्यन
करने की अनुमति देता है। भारत को प्रथम बार 1949 में